नौ आवश्यक स्वतन्त्रताए

कलीसियाओं के लिए आवश्यक है कि वे धार्मिक परम्पराओं से इन स्वतन्त्रताओं को प्राप्त करें ताकि मसीही आन्दोलन बढ़ता जाए।

जो कलीसियाएं अपने छोटे समूहों की उन्नति चाहती हैं, आप उनके लिए कार्यशालाओं को आयोजन कर, इन नौ स्वतन्त्रताओं के विषय बता सकते हैं।

जबकि आप में से कोई जब इन नौ विचारों के विषय में बता रहा, तो दूसरा कोई जन ''श्रीमान परम्परावादी'' की भूमिका कर सकता है। श्रीमान परम्परावादी विशेष प्रकार का वस्त्र पहने, सिर पर टोप लगाए और अपने नाम की एक पटिया गले में लटका लें जिस पर ''श्रीमान परम्परावादी'' लिखा हो। इसकी भूमिका यह है कि यह आपके हर विचार का विरोध करें। आपको उसके आरोपों का उत्तर देना है। अच्छा हो यदि आप दूसरों से कहें कि वे उत्तर दें। कार्यशाला में जब आप इनका परिचय दें, तो कुछ इस प्रकार कह सकते हैं, ''श्रीमान परम्परावादी संभवत: आपकी कलीसिया के सदस्य हैं और आराधना में आपके साथ भाग भी लेते हैं, वे सब जगह पाए जाते हैं, हो सकता है आप भी श्रीमान परम्परावादी हों।''

1. युवा कलीसियों को नवीन कलीसियाएं आरम्भ करने की स्वतन्त्रता शिक्षा :

- जिन लोगों ने यह कार्य किया उनमें बरनाबास और इपफ्रास प्रथम हैं।
- बाईबल में प्रेरित प्रत्येक स्थान पर गए, नई कलीसियाएं आरम्भ कीं, जिन्होंने उन्नति भी की।
- प्रेरितों ने नई कलीसियाओं का कार्य बिना तनखा और बिना चर्च बिल्डिंग के नि:शुल्क किया।

श्रीमान परम्परावादी का आरोप कुछ इस प्रकार है : हमारी कलीसिया का कानून यह है कि नयी कलीसिया आरम्भ करने से पहले हमारे मुख्यालय में सूचना भेजी जाए ताकि वे अनुमति प्रदान करें, कलीसिया में समय-सीमा हो जिसमें नया विश्वास परिपक्व मसीही बन सके और कलीसिया में बजट भी बनाया जाए।

2. ख्रीस्त और उनके प्रेरितों की आज्ञाओं का पालन सारी धार्मिक परम्पराओं व मानव निर्मित कानूनों से बढ़कर मानने करना की स्वतन्त्रता शिक्षा :

- पतरस और प्रेरितों ने आरम्भ ही से सिखाया कि ख्रीस्त की आज्ञापालन करना प्रथम कार्य होना चाहिए, इससे बढ़कर कोई वस्तु नहीं (प्रेरि. 2)।
- यीशु ने बहुत सी आज्ञाएं दीं। इन आज्ञाओं को हम पहले देख चुके हैं। उन्हें हम सात मूल आज्ञाओं में बांट सकते हैं जो 3000 लोगों ने प्रेरितों के काम 2 अध्याय में स्वीकार कीं और उन्होंने पश्चात्ताप् करके पवित्रात्मा पाया, बपतिस्मा लिया, प्रभु भोज में संभात्री होने लगे, एक दूसरे से प्रेम करने लगे, प्रार्थना के लिए एकत्रित होने लगे, दान देने लगे और चेले भी बनाने लगे।

श्रीमान परम्परावादी का विचार : हमें उन्हीं नीतियों का पालन करना चाहिए जो मैंने बताई हैं, आज्ञापालन से एकता आती है।

3. नए विश्वासियों और खोए हुए लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने की स्वतन्त्रता, उनके बीच जाना उनकी संस्कृति के अनुसार उपासना करना, उनसे भेंट करना, शिक्षा :

- बाइबल में इसके उदाहरण पाए जाते हैं, पतरस कुरनेलियुस के घर गया, प्रभु यीशु ने 70 लोगों को भेजा।

- जब भी किसी ने विश्वास किया, वे तुरन्त उसके परिवार में गए, मित्रों से भेंट की जैसा कि लेवी के साथ हुआ था, कुरेलियुस, लुदिया, फिलिप्पी के दारोगा और क्रिस्पुस के साथ हुआ था।
- उन्होंने नए विश्वासियों को अपनी मधुर संगति में उनके सगे-संबंधियों सहित बनाए रखा और अपनी सामाजिक गतिविधियों में उन्हें सम्मिलित रखा।

श्रीमान परम्परावादी इस प्रकार कहते हैं : नए विश्वासी को तुरन्त बुरा प्रभाव पड़ने से पहले उसके मित्रों, संबंधियों व उसकी संस्कृति से अलग कर देना चाहिए।

4. नए विश्वासी को बपतिस्मा देने व जहां वे आराधना करते हैं, वहां पर प्रभु भोज अविलम्ब में भाग लेने की स्वतन्त्रता, शिक्षा :

- बाइबल के उदाहरण : यीशु ख्रीस्त व येरूशलेम की कलीसिया (प्रेरितों के काम 1:38-47)

श्रीमान परम्परावादी इस प्रकार कहते हैं : बपतिस्मा और प्रभु भोज केवल अभिषिक्त पास्टर के द्वार ही दिए जाने चाहिए। बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति को पहले पानी पर चलकर दिखाना चाहिए।

5. ख्रीस्त की देह में एक दूसरे की मित्र के समान सेवा करने की स्वतन्त्रता, कलीसिया में समूह व सब सदस्य प्रेमी हों, पवित्रात्मा ने जो वरदान प्रत्येक को दिए हैं, उनका प्रयोग सबकी उन्नति के लिए किया जाए (1 कुरि. 14:24-26)। शिक्षा :

- इसके आदर्श बाइबल में कुरिन्थ की कलीसिया है।
- पवित्रात्मा ने नए विश्वासियों को कुछ वरदान दिए हैं ताकि वे एक दूसरे की सेवा में उन्हें खर्च कर सकें।
- किसी भी पादरी या डीकन के पास ऐसा आत्मिक वरदान नहीं कि वह कलीसिया स्थापित कर सके।

श्रीमान परम्परावादी का कुछ प्रकार विचार है : हर कार्य क्रमानुसार और अच्छी तरह करना चाहिए, और क्रम मेरे अनुसार यह है कि केवल पढ़े-लिखें और प्रशिक्षित पादरी ही सार्वजनिक सभा में प्रचार करें।

6. देखभाल की सेवा का नेतृत्व उन्हें देने की स्वतन्त्रता जो नए नियम मे के अनुसार बुजुर्गों की योग्यताएं रखते हों, या तो उन्हें तनख्वाह दी जाए या नहीं दी जाए। शिक्षा :

- बाइबल में इसके आदर्श-पौलुस व तीतुस।
- कुछ बाइबल से बाहर की योग्यताएं जैसे-धर्मविज्ञान कालेज का प्रशिक्षण, आर्थिक बल, सामाजिक स्तर, जातिवाद प्रभवा, व भाषा। आपकी संस्कृति में कौन सी ऐसी योग्यताएं पाई जाती हैं जो बाईबल से बाहर की है?

श्रीमान परम्पारावादी कुछ इस प्रकार कहते हैं : हमारी कलीसिया कानूनी तौर पर ऐसा पास्टर चाहती है जो अभिषिक्त हो। हमारी कानूनी सूची में 750 मांग हैं जिनका पहले पूरा किया जाना आवश्यक है। उनके विशेष शैक्षिक योग्यता, व डिग्री उनके पास होनी चाहिए और उन्हें व्यवसायिक की तरह वेतन भी मिलना चाहिए।

7. समूह की गिनती और समूह के अगुवे की योग्यता के अनुसार, नए नियम के प्रचार व शिक्षा संबंधी उपायों के अनुसार परमेश्वर वचन का प्रचार करने की स्वतन्त्रता। शिक्षा :

- नए नियम के उदाहरण : नए नियम की ''एक दूसरे के प्रति आज्ञा' तथा यीशु का वार्तालाप करने का तरीका।

श्रीमान परम्पारवादी कुछ इस प्रकार कहते हैं :परमेश्वर ने इस वर्तमान युग के लिए अलंकारिक शैली में प्रचार करना ठहराया है, हमें उच्च स्तर की श्रेष्ठ पुलपिट प्रचार की आवश्यकता है।

8. **नई कलीसियाओं की तत्कालिन आत्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए नए चरवाहों व नए अगुवों को प्रशिक्षित करने की स्वतन्त्रता। शिक्षा :**

- इसके लिए पाठ्यक्रम की सूची की आवश्यकता है जिसमें विकल्प दिए हुए होते हैं ताकि नया अगुवा अपनी इच्छा व रूचि के अनुसार पाठ्यक्रम चुनकर अध्ययन कर सकता है ताकि कलीसिया की आत्मिक आवश्यकता के अनुसार वह प्रशिक्षण ले सकें।
- यीशु ने प्राय : तत्कालिन स्थिति की आवश्यकतानुसार शिक्षा दी। पौलुस ने तीतुस को परामर्श दिया था कि क्रेते की नई कलीसिया में जिस बात की घटी है उस पर ध्यान दें।
- सभी नई कलीसियाओं की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएं होती हैं।

श्रीमान परम्परावादी कुछ इस प्रकार कहते हैं : मेरे प्रशिक्षण कार्यक्रम में उच्च स्तर का पाठ्यक्रम है और प्रत्येक विद्यार्थी एक ही प्रकार का अध्ययन करता है, आरम्भ से अन्त तक सब एक ही मार्ग पर चलते हैं, जो वे सीखते हैं, वह भविष्य में लागू किया जा सकता है।

9. **क्षेत्रिय संयोजक नियुक्त करने की स्वतन्त्रता, जो उन लोगों पर निगरानी रख सकें जो नए चरवाहों को प्रशिक्षित कर रहे हैं और नई कलीसियाएं स्थापित कर रहे हैं, जैसा की पौलुस ने तीतुस को परामर्श दिया था (तीतुस 1:5)। शिक्षा :**

- नए नियम में स्थानीय स्वतन्त्र कलीसिया का कोई उदाहरण नहीं।
- नई कलीसियाओं की असफ़लता का मूल कारण यह है कि उनका अगुवा अपने से अधिक अनुभवी अगुवे से परामर्श नहीं लेता, न ही वह चाहता है कि कोई उसे परामर्श दे।

श्रीमान परम्परावादी कुछ इस प्रकार कहते हैं : हम किसी भी प्रकार कोई भक्तिहीन पुरोहितों का शासन अथवा बिशपों की तारनाशाही अपनी कलीसियाओं पर नहीं चाहते कि हमें क्या विश्वास करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, या क्या करें या न करें। हम स्थानीय कलीसिया का अपना अलग स्वतन्त्र अधिकार रखते हैं। अथवा ''मैं बिशप हूं और मैं इस क्षेत्र पर अधिकारी नियुक्त किया गया हूं, और मैं नहीं चाहता कि कोई अन्य नया संयोजक आकर मेरे क्षेत्र में अधिकार जताए। इसके अलावा मेरे पास समय भी नहीं है कि मै नए कार्यक्रमों के आयोजन में सहयोग कर सकूं। इस कारण हम वही करेंगे जैसा करते चले आ रहे हैं।''

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net